ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 363-367
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

फतेहचन्द चौहान

सहायक आचार्य-संस्कृत, राजकीय महाविद्यालय खाजूवाला, बीकानेर.
एवं शोधार्थी मानविकी संकाय, संस्कृत विभाग (MLSU Udaipur).

Corresponding Author :

फतेहचन्द चौहान

सहायक आचार्य-संस्कृत, राजकीय महाविद्यालय खाजूवाला, बीकानेर.
एवं शोधार्थी मानविकी संकाय, संस्कृत विभाग (MLSU Udaipur).

अम्बेडकरचरित संस्कृत काव्यों का सामाजिक विश्लेषण

शोध सार : संस्कृत साहित्य के अम्बेडकर-जीवन पर आधारित काव्यों में शूद्रों की सामाजिक एवं शैक्षिक स्थिति का गहन आलोचनात्मक चित्रण प्राप्त होता है। ये काव्य संस्कृत साहित्य को केवल अतीत की गौरवगाथा तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे सामाजिक न्याय, समानता और शिक्षा के सार्वभौमिक अधिकारों के विमर्श से जोड़ते हैं। डॉ. अम्बेडकर के जीवन और विचारों के माध्यम से ये काव्य वर्णव्यवस्था की वैचारिक संरचना पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं और एक समतामूलक समाज की स्थापना की साहित्यिक आकांक्षा को सशक्त रूप प्रदान करते हैं। अम्बेडकर-चरित संस्कृत- काव्य यह दर्शाते हैं कि अम्बेडकर ने स्वयं शिक्षा के माध्यम से वर्णव्यवस्था की जकड़न को तोड़ा और शूद्रों को आत्मसम्मान तथा अधिकार प्राप्त करने की नई राह दिखाई।

Key words : अम्बेडकर, संस्कृत साहित्य, सामाजिक न्याय, समानता, शिक्षा।

अम्बेडकरचरिताश्रित संस्कृत काव्य तात्कालिक भारत के सामाजिक राजनीतिक स्थिति का मार्मिक एवं यथार्थ चित्रण करते हैं। उन्नीसवीं एवं बीसवीं सदी का यह वह कालखंड था जब यह समाज में अत्यधिक असमानता विद्यमान थी। महिलाओं, शूद्रों एवं अवर्णों के साथ कई तरह के भेदभाव सामाजिक व्यवस्था बन चुके थे। सामाजिक कुरीतियाँ अपने चरम पर थी। शूद्रों एवं अस्पृश्यों को उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता था। उन्हें शिक्षा के अधिकार से वंचित रखा गया। सार्वजनिक तालाबों से उन्हें पानी पीने नहीं दिया जाता था,जिन तालाबों से पशु पक्षी पानी पी सकते थे उन्हीं तालाबों में अपने ही धर्म के लाखों अनुयायियों को पानी पीने के अधिकार से वंचित रखा गया। गांवों में नाई उनके बाल काटने से मना कर देते थे। समाज में हर स्तर पर उन्हें अपमान के कडवे घूंट पीने पड़ते थे।

भीमस्य नापित: केशान्नाकर्तयत्कदाचन।
विद्यालयेऽन्यछात्रेभ्य : पृथक संतिष्ठते सदा ।।[1]

अम्बेडकरदर्शनम् महाकाव्य के द्वितीय सर्ग के अनुसार गाँव में नाई अछूत माने जाने वाले लोगों के बाल नहीं काटते थे और विद्यालय में उन्हें अन्य विद्यार्थियों से पृथक बैठाया जाता था। भीमायनम् महाकाव्य में तृतीय सर्ग में अंत्यज -मानहानि-प्रसंगाः में इसी बात की पुष्टि करते हुए महाकवि प्रभाकर शंकर जोशी कहते हैं कि नाई के द्वारा बाल काटने से मना करने पर भीमराव अत्यंत दुखी थे तब उनकी बड़ी बहन ने उनके बाल काटे।

न नापितोऽप्यन्त्यज-केश-जूटं सिद्धोऽभवत् कर्तयितुं कदापि।
प्ररुढ-केशे सति बन्धु-वर्गे भीम-स्वसा नापित-कर्म चक्रे ।।[2]

"दूरमपसर, सम्पूर्ण जलं त्वयाशुचि कृतम्। दूरमपेहि।" अक-स्मान्नैकेषां सहाध्यायिनां सभ्रूभङ्गमेतद्भर्त्सनं श्रुत्वावक्षिप्त आत्मनः पिपासां शमयितुं प्रवृत्त एको विद्यार्थी पिपासित एव किञ्चिद् दूरमपसृत्य तूष्णीं तस्थौ। विद्यालय एतादृशीं दुरवस्थां पर्यवस्थातुमुपद्रुतोऽसौ किंकर्त्त-व्यविमूढो भीमरावो न किमपि कर्तुं चक्षमे। असौ भीमरावः कालान्तरे भारतीयसंविधानस्य निर्माता 'अम्बेदकरः' इति संज्ञया पृथुप्रथो बभूव। स एव महायशस्को महात्मा बाबासाहबभीमरावो ऽम्बेदकरमहाभागो वर्ततेऽस्माकं कथानायकः ।[3]

महार्हं रत्नमम्बेदकरः (जीवन चरितम्) के रचयिता महेशचन्द्र शर्मा गौतम सामाजिक भेदभाव अस्पृश्यता को इंगित करते हुए ग्रंथारम्भ में ही प्रथम आयाम में कहते हैं कि बचपन में जिसे सार्वजनिक स्थानों पर पानी पीने के अधिकार तक से वंचित रखा गया “दूर हो जा तूने सारे पानी को अपवित्र कर दिया है” इसे अपमान सहन करते हुए एवं विद्यालय में भी शिक्षार्जन के समय जिसे अन्य विद्यार्थियों से पृथक बैठाया जाता था इस प्रकार तिरस्कार सहन करते हुए जिन्होंने अपने ज्ञान के बल पर भारतीय संविधान का निर्माण किया वही बाबा साहब अम्बेडकर हमारे कथानक के नायक हैं।

1920 में अम्बेडकर ने मूकनायक पत्रिका का सम्पादन किया। जिसके लेख में उहोने लिखा कि ब्राह्मणवादी अथवा पुरोहितवादी लोग कहते हैं कि ईश्वर इस संसार के कण कण में विराजमान है समस्त जीव-जगत में ईश्वर का वास है परन्तु वही लोग अपने ही कथन को यथार्थ जीवन में आचरण में नहीं लाते है। अपने ही धर्म के लाखों अनुयायियों के साथ जानवरों से भी बुरा व्यवहार करते है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्चित जगत्यां जगत्।
कथयन्ति परं ते नानुचरन्ति तथाविधम् ।।[4]

अमेरिका से उच्च अध्ययन के पश्चात अम्बेडकर ने बड़ौदा रियासत के राजा सयाजी गायकवाड के शासन में सैन्य सचिव के रुप में नौकरी करना स्वीकार किया परंतु उच्च पद को प्राप्त करने के बाद भी छुआछूत के कटु अनुभवों को सहन किया अम्बेडकरदर्शनम् महाकाव्य में बलदेवसिंह मेहरा चतुर्थ सर्ग में कहते हैं कि-

तेन सार्धं पुमान्धर्माच्च्युत्कर्माणि समाचरन्।
कार्यलाये जलं पातुं न प्राप्नोति कदाचन ।।[5]

उनके साथ मनुष्यधर्म से भी गिरा हुआ व्यवहार किया जा रहा था कार्यालय के चपरासी दूर से फ़ाइले उनकी मेज पर फेंक देते थे अथवा लकड़ी के डंडे से दूर से ही फ़ाइले एवं अन्य दस्तावेज दिया करते थे कभी-कभी तो स्थिति यहाँ तक बनती थी कि उन्हें कार्यालय में पानी भी नसीब नहीं हो पाता था ।इसी बात की पुष्टि करते हुए शान्तिभिक्षु शास्त्री भीमाम्बेड़करशतकम् में कहते हैं कि उच्च पद प्राप्त करने के बाद भी उन्हे न शान्ति प्राप्त हुई न हि सुख क्योंकि चारों ओर छुआछूत का जहर फैला हुआ था।

स हि लब्धपदोऽप्येवं शान्तिसौख्यं न लब्धवान्।
स्पृश्यास्पृश्यविषाक्तेऽभून्मण्डले परिपीड़ित ।।[6]

इसी दौरान पारसी सराय में ठहरने के दौरान की घटना का जिक्र करते हुए आँखें भर आती है उस समय अछूत

माने जाने वाले लोगों को सार्वजनिक होटलों धर्मशालाओं में रुकने के के लिए कमरा नहीं दिया जाता था। बहुत प्रयास के बाद भी ठहरने के लिए स्थान की व्यवस्था नहीं होने के बाद वे एक पारसी धर्मशाला में गए परंतु चौकीदार ने हिन्दू होने के कारण उन्हें मना कर दिया तब अम्बेडकर ने उनसे कहा कि अगर मैं पारसी नाम रख लूँ तो क्या मुझे रुकने दिया जा सकता है चौकीदार ने हाँ कह दी। परंतु कुछ ही दिनों में यह बात उजागर हो गई और एक दिन 10-12 पारसी लोग आए और उन्होंने बुरा भला कहते हुए शाम तक सराय खाली करने का हुक्म दे दिया। अम्बेडकर को सरकारी आवास अभी तक उलब्ध नहीं हो पाया था अतः उन्होंने अपने मित्रों से सहायता मांगने की सोची जिनमें एक इसाई एवं एक हिन्दू था। हिन्दू मित्र ने यह कहते हुए मना कर दिया कि अगर मैं तुम्हें घर ले जाता हूँ तो मेरे घर के सारे नौकर भाग जायेंगे एवं इसाई मित्र ने बहाना बना दिया कि अगले दिन मेरी पत्नी घर आयेगी तब मैं विचार विमर्श करके बताऊँगा। अम्बेडकर कहते हैं कि उस दिन मुझे अहसास हुआ कि जो हिन्दू के लिए अछूत है वह पारसी और इसाई के लिए भी अछूत ही है।

प्राचीन भारत में सिंधु सभ्यता के समय भारतीय समाज मातृसत्तात्मक था महिलाओं की स्थिति आदर्श थी। परंतु धीरे-धीरे परिस्थितियाँ बदलती गई और मध्ययुगीन समय आते-आते महिलाओं की दशा शोचनीय हो गई सामाजिक पारिवारिक एवं जातीय बंधनों में जकड़ी महिलाओं की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई। भारतीय संस्कृत-सभ्यता-समाज का यथार्थ मूल्यांकन तक तक अधूरा है जब तक इस मूल्यांकन में महिलाओं की स्थिति को केंद्रित नहीं किया जाता। स्त्री केवल परिवार या समाज की एक इकाई न होकर सामाजिक चेतना ,संस्कृति एवं नैतिकता का आधार है। किसी भी सभ्यता का सामाजिक एवं बौद्धिक स्तर तथा मानवीय मूल्य आँकने का मानक यही है कि उस समाज या सभ्यता में महिलाओं की स्थिति क्या है। इसी को रेखांकित करते हुए अम्बेडकरदर्शनम् महाकाव्य में अम्बेडकर के विचारों को उद्धृत करते हुए कहते हैं कि -

यदि कस्यापि वर्गस्य प्रगतिं ज्ञातुमुत्सहे।
नारीणां हि समुन्नत्यनुमानं चास्य गण्यते ।।[7]

यदि किसी भी जाति-समाज-वर्ग अथवा राष्ट्र की प्रगति का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उस जाति-समाज-वर्ग अथवा राष्ट्र की महिलाओं ने कितनी प्रगति की है। भारतीय परम्परा में एक ओर नारी को शक्ति, प्रज्ञा एवं लक्ष्मी का स्वरुप माना जाता है वहीं दूसरी और उसे अधिकार विहीन एवं शिक्षा विहीन बनाकर दास बना दिया गया जो को भारतीय समाज की दोहरी मानसिकता को प्रकट करता है। बाबा साहब अम्बेडकर नारी मुक्ति को केवल सहानुभूति का विषय ना मानकर सामाजिक न्याय की अनिवार्य शर्त मानते हैं।

डॉ. बी.आर. आंबेडकर के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना थी महाड जल सत्याग्रह। 1923 में बंबई विधान परिषद् में विधान परिषद के सदस्य एस.के. बोले द्वारा प्रस्ताव पारित किया गया कि "सरकार के धन से संचालित जलप्राप्त करने के स्थल कुएं-तालाब, धर्मशालाएं, न्यायालय, कार्यालय, विद्यालय, स्वास्थ्य केंद्र एवं अन्य सार्वजनिक स्थल आदि अस्पृश्यों के लिए भी वैसे ही हैं जैसे सवर्णों के लिए। इसलिए कोई भी उन्हें इनके प्रयोग से रोकेगा नहीं।" इस प्रस्ताव को सभी स्थानीय निकायों द्वारा लागू किया जाना था परन्तु अनेक निकायों ने अस्पृश्यों को उनके अधिकारों से वंचित रखा। 1926 में एस.के. बोले ने पुनः प्रस्ताव रखा कि जो नगरपालिकाएं उक्त प्रस्ताव को लागू नहीं कर रही है उनके अनुदानों को रोक दिया जाए। महाड़ नगरपालिका ने इस प्रस्ताव को लागू करते हुए चवदार के सार्वजनिक तालाब को सवर्णों के समान अस्पृश्योंके लिए भी खोल दिया जिससे स्थानीय सवर्ण नाराज हो गए। नगरपालिका द्वारा तालाब अस्पृश्यों के लिए खोल देने के बाद भी यह केवल प्रस्ताव तक ही सीमित था स्थानीय दलित अभी भी सवर्णों के डर से तालाब का पानी नहीं पी सकते थे मार्च 1927 में बहिष्कृत परिषद की सभा का आयोजन किया गया जिसमें यह निर्णय लिया गया की सभी अछूत जातियाँ सामूहिक रुप से चौदार तालाब पर पानी

पीने के लिए जायेगें।

एकीभूयाऽखिला दीनाश्चौदारसरसस्तटम्।
जलं पातुं गमिष्याम: प्रस्तावश्चेति पारित:॥[8]

अर्थात् 1927 में बहिष्कृत परिषद सभा की विषय समिति में प्रस्ताव पारित किया गया की सभी अस्पृश्य माने जाने वाली सभी जातियों के लोग एक साथ महाड़ के चवदार तालाब से पानी पीकर जल सत्याग्रह करेंगे।

आदौ भीमो महाभागस्त्वपिब: सरसस्जलम्
अछूतबान्धवाश्चापि तमेवान्वसरन्तदा ।।[9]

सभा स्थल पर सर्वप्रथम डॉ. अम्बेडकर ने तालाब के जल को अपने हाथों से छुआ और तालाब का पानी पिया उनका अनुसरण करते हुए हजारों दलित महिला पुरुषों ने तालाब का पानी पीकर क्रांति का सूत्रपात किया। इस अवसर पर अम्बेडकर ने सभा को संबोधित किया कि तुम्हें तुम्हारे अधिकार दूसरों के सामने याचना करने से प्राप्त नहीं होंगे इसके लिए सभी को सामाजिक रूप से संगठित होकर संघर्ष करने पड़ेगा क्योंकि छीने हुए अधिकार अत्याचारियों से विनय प्रार्थना से नहीं मिला करते हैं, अपितु वे तो कठिन संघर्ष करने से ही प्राप्त हुआ करते हैं।

अपहृताधिकारास्तु नाप्यन्ते दीनभाषया।
संघर्षेण प्रचंडेन प्रोवाच दीनप्रेरक: ।।[10]

अम्बेडकरदर्शनम् महाकाव्य में अम्बेडकर कहते हैं की जिस जाति व्यवस्था के कारण सवर्णों ने तुम्हें तुम्हारे अधिकारों से सैकड़ों वर्षो से वंचित रखा और उन्हें धर्मसम्मत बताया क्या वे तुम्हें तुम्हारे अधिकार याचना मात्र से प्रदान कर देंगे? इसके लिए तुम्हें सामाजिक रूप से संगठित प्रयास करने होंगे। जब तक तुम सामाजिक रूप से संगठित नहीं बनोगे तब तक तुम्हारा शोषण होता रहेगा। तुम्हें तुम्हारे अधिकारों के लिए अत्यधिक संघर्ष करना पड़ेगा।

सरोवरेषु कूपेषु तथा देवालयषु च।
विडाला : कुक्कुरा : सर्वे पशव: पक्षिणस्तथा :।।
स्वच्छन्दास्ते प्रवेशाय परं बत ! न चान्त्यजा :।
अपवित्रा : पदैरेषां भवन्त्येते मलीमसा ।।[11]

जिन देवालयों में उन्हीं को पूजने वाले लाखों अछूतों को प्रवेश का अधिकार नहीं है जिन तालाबों तथा कुओं में कुत्ते, बिल्ली एवं सभी पशु पक्षियों को पानी पीने की आजादी है परन्तु उन्हीं जलाशयों में तुम्हें पानी पीने का अधिकार नहीं है। यह बहुत ही दुख का विषय है कि तुम्हारे स्पर्शमात्र से उनके देवालय कुए तालाब अपवित्र हो जाते हैं। सभी मानवों को स्वाभिमान पूवर्क जीवन जीने का समान अधिकार होना चाहिए तुम्हें स्वाभिमान पूर्वक जीवन के अधिकार के लिए संघर्ष करना ही पड़ेगा।

निष्कर्ष : डॉ. अम्बेडकर का व्यक्तित्व संस्कृत के इन काव्यों में शूद्रों की सामाजिक और शैक्षिक मुक्ति की धुरी बन जाता है। अम्बेडकर को आधुनिक युग का वह महापुरुष बताया गया है, जिसने शास्त्रों से अधिक मानव-मूल्यों को महत्त्व दिया। उनका जीवन शूद्र समाज के उस संघर्ष का प्रतीक बन जाता है, जो सदियों की दासता और अज्ञान के विरुद्ध खड़ा हुआ। इन काव्यों में अम्बेडकर का शिक्षा-संबंधी दृष्टिकोण अत्यंत स्पष्ट रूप में उभरता है। शिक्षा को केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति का माध्यम माना गया है। शूद्रों के लिए शिक्षा को वह शक्ति बताया गया है, जिससे वे अपने शोषण की ऐतिहासिक जड़ों को पहचान सकते हैं और उसके विरुद्ध संगठित संघर्ष कर सकते हैं। संस्कृत काव्यों में अम्बेडकर का यह विचार विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि यह परंपरागत संस्कृत साहित्य की रुढ़ विचारधारा के विपरीत खड़ा होता है।

अम्बेडकर-जीवनाश्रित संस्कृत काव्यों में शूद्रों की सामाजिक और शैक्षिक स्थिति का चित्रण केवल अतीत की आलोचना तक सीमित नहीं है। ये काव्य वर्तमान समाज के लिए भी एक वैचारिक हस्तक्षेप प्रस्तुत करते हैं। कवि यह संकेत देते हैं कि यदि शिक्षा और सामाजिक समानता का प्रश्न अनसुलझा रहता है, तो लोकतंत्र और मानवाधिकार केवल शब्द बनकर रह जाते हैं। इस प्रकार, संस्कृत साहित्य में रचित अम्बेडकर-जीवनाश्रित काव्य शूद्रों की पीड़ा, संघर्ष और मुक्ति की आकांक्षा को शास्त्रीय भाषा में अभिव्यक्त करते हुए एक नई साहित्यिक और वैचारिक परंपरा की स्थापना करते हैं।

सन्दर्भ :

1. बलदेवसिंह मेहरा :अम्बेडकरदर्शनम्, देवेश पब्लिकेशन्स, रोहतक, 2009 पृ.सं -10
2. प्रभाकर शंकर जोशी :भीमायनम् , शारदा गौरव ग्रन्थ माला, पुणे, तृतीय सर्ग, पृ.सं -17
3. महेशचन्द्रशर्मा गौतम : महार्हं रत्नमम्बेदकरः (जीवन चरितम्) निर्मल पब्लिकेशन दिल्ली, पृ.सं. 1
4. बलदेवसिंह मेहरा :अम्बेडकरदर्शनम्, देवेश पब्लिकेशन्स, रोहतक, 2009 पृ.सं -28
5. बलदेवसिंह मेहरा :अम्बेडकरदर्शनम्, देवेश पब्लिकेशन्स, रोहतक, 2009 पृ.सं -23
6. शान्तिभिक्षु शास्त्री :भीमाम्बेडकरशतकम् , राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली ,2012 पृ.सं.83
7. बलदेवसिंह मेहरा :अम्बेडकरदर्शनम्, देवेश पब्लिकेशन्स, रोहतक, 2009 पृ.सं -58
8. बलदेवसिंह मेहरा :अम्बेडकरदर्शनम्, देवेश पब्लिकेशन्स, रोहतक, 2009 पृ.सं -35
9. बलदेवसिंह मेहरा :अम्बेडकरदर्शनम्, देवेश पब्लिकेशन्स, रोहतक, 2009 पृ.सं -35
10. बलदेवसिंह मेहरा :अम्बेडकरदर्शनम्, देवेश पब्लिकेशन्स, रोहतक, 2009 पृ.सं -37
11. बलदेवसिंह मेहरा :अम्बेडकरदर्शनम्, देवेश पब्लिकेशन्स, रोहतक, 2009 पृ.सं -35-36

•